प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी

प्रेमचंद हिन्दी के युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं। प्रेमचंद की कहानियों में विषय-वैविध्य दिखाई पड़ता है। उनकी कहानियाँ अपने परिवेश से, अपने आसपास के जीवन से जुड़ी हुई हैं। उनकी अधिकांश कहानियों का विषय ग्रामीण जीवन से लिया गया है, किन्तु कई कहानियाँ कस्बे की जिन्दगी या स्कूल-कॉलेज से भी जुड़ी हुई हैं। उनकी कहानियों के पात्र हर वर्ग, धर्म, जाति के हैं। कोई हिन्दू है तो कोई मुसलमान, कोई किसान है, तो कोई विद्यार्थी। अपनी कहानियों में उन्होंने विविध समस्याओं को भी उठाया है – जमींदारों के द्वारा किसानों के शोषण की समस्या, सूदखोरों के शोषण से पिसते ग्रामीणों की समस्या, छुआछूत की समस्या, रूढ़ि एवं अंधविश्वास, संयुक्त परिवार की समस्या, भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्याएँ आदि। मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में प्रकाशित हुई है। प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में – 'पंच परमेश्वर', 'बूढ़ी काकी', 'गृहदाह', 'परीक्षा', 'सवा सेर गेहूँ', 'सुजान भगत', 'कजाकी', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बड़े भाई साहब', 'नशा', 'ठाकुर का कुआँ', 'ईदगाह', 'पूस की रात', और 'कफन' के नाम लिए जा सकते हैं।

Scanned by CamScanner

प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकारों में पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', सुदर्शन, जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, रायकृष्णदास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', भगवतीप्रसाद वाजपेयी, जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल आदि उल्लेखनीय हैं।

कौशिक जी की प्रथम कहानी 'रक्षाबन्धन' सन् 1912 में ही प्रकाशित हो चुकी थी तथापि उनकी कहानी कला में निखार बाद में ही आया। उन्होंने लगभग 200 कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों का विषय प्राय: सामाजिक समस्याओं - दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं अंधविश्वास आदि से जुड़ा हुआ है। 'ताई', 'विधवा', 'विद्रोही', 'पतितपावन' उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

सुदर्शन ने अपनी कहानियों का विषय जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को बनाया है। उनकी चर्चित कहानियाँ हैं - 'हार की जीत', 'दो मित्र', 'एथेंस का सत्याथी', 'पत्थरों का सौदागर', 'कमल की बेटी' आदि। उनकी कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण के साथ-साथ अन्तर्द्वन्द्व की प्रधानता है।

प्रेमचंद युग के प्रतिभाशाली कथाकार के रूप में जयशंकर प्रसाद का नाम लिया जाता है। उनके पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल'। उनकी कहानियों में प्रेम चित्रण, प्रकृति निरूपण, कल्पना की प्रचुरता, ऐतिहासिक देशकाल एवं वातावरण, निश्छल प्रेम, बलिदान और त्याग

Scanned by CamScanner

विद्यमान हैं।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने ऐतिहासिक विषयों पर मार्मिक कहानियों की रचना की। 'अंबपालिका', 'निष्कुराज', 'सिंहगढ़ विजय', 'रूठी रानी' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क ने मध्य-वर्गीय जीवन से अपने कहानियों के विषय चुने हैं। समाज की कुरीतियों, आंदोलनों एवं कुंठाओं को भी उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। अश्क जी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं - 'निशानियाँ' और 'दो धारा'।

भगवती प्रसाद वाजपेयी ने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं, जिनमें सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ है। अद्भुत समस्या, विधवा विवाह, वेश्या समस्या, जैसी अनेक समस्याओं को इन कहानियों में उठाया गया है।

प्रेमचंदयुगीन कहानीकारों में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' एक उल्लेखनीय कथाकार हैं। उनकी उनकी कहानियों के अनेक संकलन प्रकाश में आए हैं - 'चिनगारियाँ', 'शैतान मण्डली', 'बलात्कार', 'इन्द्रधनुष', 'चाकलेट', 'दोजख की आग' आदि। सामाजिक यथार्थ को नग्न रूप में पेश करने में वे सिद्धहस्त कथाकार माने जाते हैं। इनकी कहानियों में सामाजिक शोषण, अनाचार एवं कुरीतियों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है।

राधिकारमण प्रसाद सिंह की भी कई कहानियाँ इस काल में प्रसिद्ध हो चुकी थी।

Scanned by CamScanner

'कानों में कंगन', 'दरिद्रनारायण' और 'पैसे की धुंधनी' उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। इस काल के कुछ अन्य कहानीकार हैं – राहुल सांकृत्यायन (सतमी के बच्चे), सुभद्राकुमारी चौहान ('बिखरे मोती' एवं 'उन्मादिनी' संग्रह), शिवरानी देवी ('कौमुदी'), उषा देवी मित्रा, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णु प्रभाकर आदि।

इस युग के कहानी साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं पारिवारिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं का चित्रण हुआ है।

शैली की दृष्टि से इस युग की कहानियाँ प्रायः सुगठित एवं संतुलित हैं। कहानियों के आरंभ और अंत चमत्कारिक तथा शीर्षक संक्षिप्त एवं सार्थक है। पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविक तथा भाषा सरल पात्रानुकूल एवं परिमार्जित है। इनमें विचार, भाव कला और उद्देश्य लोकरंजन तथा लोकमंगल दोनों पक्षों का समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

Scanned by CamScanner